1. महादेवी वर्मा

○ *भक्तिन*

लेखिका–परिचय

जीवन–परिचय :– साहित्य सेवी, समाज सेवी महादेवी वर्मा, का जन्म सन् 1907 ई॰ में उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध नगर फरुर्खाबाद में 'होलिका दहन' के दिन हुआ था। उनकी माता का नाम 'हेमरानी' था। वह एक साधारण कवयित्री एवं कृष्ण भक्त थीं। इनके पिता प्रधानाचार्य थे। इनके नाना ब्रज भाषा के कवि थे। माता एवं नाना के गुणों का प्रभाव महादेवी जी पर भी पड़ा। मैट्रिक पास करने के बाद ही वह कविता लिखने लगीं। नौ वर्ष की उम्र में इनका विवाह श्री स्वरूप नारायण वर्मा से हो गया। कुछ समय बाद इनकी माता का स्वर्गवास हो गया। माँ का स्वर्गवास होने के बाद भी महादेवी जी ने अपना अध्ययन जारी रखा। संस्कृत में एम.ए. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। नारी समाज में शिक्षा–प्रसार के उद्देश्य से उन्होंने प्रयाग महिला विद्यापीठ की स्थापना की, विद्यापीठ में प्रधानाचार्य पद पर कार्य करते हुए सन् 1965 में अवकाश ग्रहण कर लिया। साहित्य सेवी महादेवी वर्मा का निधन 11 सितम्बर, 1987 को हो गया।

प्रमुख रचनाएँ :– काव्यसंग्रह – दीपशिखा, यामा, रश्मि, नीरजा, सान्ध्यगीत, नीहार।

निबन्धसंग्रह :– शृंखला की कड़ियाँ, आपदा, संकल्पिता, भारतीय संस्कृति के स्वर, क्षणदा, साहित्यकार की आस्था आदि।

संस्मरण एवं रेखाचित्र :– अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, मेरा परिवार, पथ के साथी आदि।

साहित्यिक विशेषताएँ :– 'महादेवी वर्मा' कविता के क्षेत्र में छायावाद के चार स्तंभों में से एक मानी जाती हैं। संस्मरण एवं रेखाचित्रों के कारण एक अप्रितम गद्यकार के रूप में मानी जाती हैं। इन्होंने चाँद पत्रिका का सम्पादन बड़ी योग्यता के साथ किया। महादेवी जी यथार्थपरक गद्य लेखिका थीं। आपको काव्य संग्रह के लिए सन् 1983 ई॰ में ज्ञान पीठ पुरस्कार, उत्तर–प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा भारत भारती तथा भारत सरकार द्वारा सन् 1956 ई॰ में पदम भूषण से अलंकृत किया गया।

इनकी शैली काव्यात्मक और कल्पनात्मक है भाव सतेज और मर्मस्पर्शी है। इन्होंने अपनी रचनाओं में संस्कृत की तत्सम शब्दावली के साथ–साथ उर्दू, फारसी, अँग्रेजी के लोक प्रचलित शब्दों का भी प्रयोग किया है।

Scanned with CamScanner

भक्तिन

❖ पाठ का सारांश

प्रस्तुत 'भक्तिन' पाठ महादेवी जी का प्रसिद्ध संस्मरणात्मक रेखाचित्र है जो 'स्मृति की रेखाएँ' से संकलित है, इसमें महादेवी जी ने अपनी सेविका भक्तिन के अतीत और वर्तमान का परिचय देते हुए उनके व्यक्तित्व का बहुत आकर्षक चित्रण किया है। इसमें अक्खड़ भक्तिन महादेवी जी के प्रति कितनी आत्मीय थीं, भक्तिन के बहाने स्त्री अस्मिता की संघर्षपूर्ण आवाज का महादेवी जी ने वर्णन किया है।

भक्तिन का जन्म इलाहाबाद के पास प्रसिद्ध ऐतिहासिक गाँव झूँसी में अहीर परिवार में हुआ था। उसके पिता का नाम सूरमा था। माँ के स्वर्गवास के बाद सौतेली माता के द्वारा पालन पोषण हुआ। पाँच वर्ष की आयु में भक्तिन का विवाह हँडिया ग्राम के एक सम्पन्न अहीर के सबसे छोटे पुत्र के साथ हुआ था। नौ वर्ष की आयु में ही सौतेली माता ने उसका गौना कर दिया।

भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी था। लक्ष्मी का कद छोटा एवं शरीर दुबला था। वह अपना नाम किसी को बताना नहीं चाहती थीं। वह जब लेखिका के यहाँ नौकरी करने आई तब उसने ईमानदारी का परिचय देते हुए अपना नाम लक्ष्मी बताया और लेखिका से आग्रह किया कि उसका वास्तविक नाम किसी को न बताया जाय। लक्ष्मी के गले में माला देखकर लेखिका ने उसका नाम भक्तिन रखा। तब से वह हनुमान जी की भाँति हमेशा लेखिका की सेवा करती रही।

Scanned with CamScanner

भक्तिन के पिता उसे असीम स्नेह करते थे इसलिए उसकी सौतेली माता उससे ईर्ष्या करती थी। इसलिए पिता के बीमार होने और मृत्यु हो जाने पर भी सौतेली माता ने भक्तिन को पिता की मृत्यु का समाचार बहुत दिनों बाद भेजा। ससुराल वालों ने भी उसे समाचार नहीं बताया। सासु ने मायके उसे सजा धजाकर भेजा। मायके पहुँचने पर उसे पिता की मृत्यु का समाचार मिला। सौतेली माँ के उपेक्षापूर्ण व्यवहार के कारण वह तुरन्त वापस ससुराल लौट आई।

कुछ दिनों बाद उसने दो पुत्रियों को जन्म दिया। उसकी जेठानियों के लड़के थे इसलिए जिठानियाँ उसकी उपेक्षा करने लगीं परन्तु भक्तिन घर का सारा कार्य बड़ी कुशलता से करती थी। जिठानियों के लड़के दूध पीते थे भक्तिन की लड़कियाँ मट्ठा पीती थीं। भक्तिन के परिश्रमी, तेजस्विनी, पतिव्रता होने के कारण उसके पति उसे चाहते थे इसलिए वह भाइयों से अलग हो गये।

धूमधास से बड़ी लड़की का विवाह ही कर पाये थे कि पति का निधन हो गया। जेठ जिठानी चाहते थे कि वह दूसरी शादी करले तो उसका सारा हिस्सा उन्हें मिल जायेगा। भक्तिन ने कहा कि "हम कुकरी बिलारी न होएँ हमार मन पुसाई तो हम दूसरा के साथ जाब नाहि त तुम्हार पचें की छाती पै हो रहा भूंजब और राज करब समुझे रहौ।"

भक्तिन ने अजिया ससुर से कहा है कि वह सुई की नोंक के बराबर भी अपना हिस्सा नहीं देगी वह यहीं रहेगी उसके बाद उसने छोटी पुत्री की शादी कर दी और बड़े दामाद को घर जमाई बनाकर रखने लगी। दुर्भाग्यवश बड़ी लड़की विधवा हो गई जिठौत के लड़के ने जमीन हथियाने के लिए अपने साले से चचेरी बहिन की शादी करने को भक्तिन से कहा। समझदार लड़की ने शादी से मना कर दिया। एक दिन माँ की अनुपस्थिति में वह बेटी के कमरे में घुस गया और दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया। लड़की ने उस की पिटाई लगाई और बाहर आ गई। गाँव में पंचायत हुई पचांयत ने जेठ के पाले को ही उसका पति माना, दामाद तीतर लड़ाता था और बेटी क्रोध में जलती रहती। पारिवारिक कलह के कारण जमींदार का लगान समय पर नहीं पहुँचा। जमींदार ने भक्तिन को बुलाकर दिन भर धूप में खड़ा रखा और अपमानित किया। अपमान उसकी कर्मठता में कलंक बन गया। दूसरे दिन गाँव छोड़कर काम की तलाश में शहर आ गई।

भक्तिन की चाँद घुटी थी मैली धोती पहने उसकी वेशभूषा में गृहस्थ और वैराग्य देखकर मैंने खाना बनाने के बारे में पूछा तो उसने कहा – "ईकउन बड़ी बात हे आय। रोटी बनाय जानत हैं, दाल राँध लेइत हैं, साग–भाजी छँउक सकित हैं अउर बाकी का रहा।" दूसरे दिन भक्तिन ने नहाकर सूर्य और पीपल को अर्घ देकर चौके में कोयले की मोटी रेखा खींचकर खाना बनाया जब लेखिका चौके में रेखा के अन्दर पहुँचीं तब उसने एक अंगुल मोटी और गहरी काली चित्तीदार चार रोटियाँ और दाल परोस दी। जब मैंने कहा कि यह क्या बनाया है ? तो वह हत बुद्धि हो गई इस पर उसने कहा शाम को तरकारी बना देंगे, चटनी पीस देंगे, और गाँव से मैं गुड़ लाई हूँ दे दूँगी और क्या खाने में कला वत्तू चाहिए।

भक्तिन का स्वभाव ऐसा था कि वह दूसरों को अपने मन के अनुसार बना लेती थी, इसीलिए लेखिका देहाती सी हो गईं परन्तु भक्तिन के व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वह कहती थी मकई का दलिया, बाजरे के तिल लगे पुऐ, ज्वार के भुने हुए भुट्टे के हरे दानों की खिचड़ी तथा महुए की लपसी संसार भर के हलवे को जला सकती है। मेरे नाराज होने पर भी उसने कभी साफ धोती नहीं पहनी बल्कि मेरे धुले कपड़ों की तह बनाते समय और सिलवटें डाल देती थी उसने अनेकों दंत कथाएँ मुझे रटा दी थीं परन्तु वस्यं 'आँय' के स्थान पर 'जी' कहने का शिष्टाचार भी नहीं सीखा।

भक्तिन घर में इधर–उधर पड़े पैसे रुपये सँभालकर रख लेती मुझे क्रोध आता तो बात इधर से उधर कर बदल कर बताना झूँठ नहीं मानती। एक दिन मैंने कहा स्त्रियों को सिर घुटाना अच्छा नहीं लगता। शास्त्र की बात करते हुए कहा "तीरथ गए मुड़ाँए सिद्ध" और प्रत्येक वृहस्पतिवार को चूड़ाकर्म कराती। सभी काम करने वाले से अँगूठे के स्थान पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा तो वह कहने लगी "हमारी मालकिन तो रात–दिन कितबियन माँ गड़ी रहतीं हैं। अब हमहूँ पढ़ै लागब तो घर–गिरिस्ती कउन देखी सुनी" इसके बाद में वह पढ़ने वालों की गुरु बन बैठी।

लेखिका जब कोई लेख आदि लिखतीं उसके चित्र, उत्तर पुस्तिकाएँ इधर–उधर फैली होती भक्तिन उन्हें उठाकर ठीक से रखती तथा सबसे हाथ बटाने को कहती। इससे प्रमाणित होता था कि

Scanned with CamScanner

भक्तिन अधिक बुद्धिमान है रात को जब लेखिका लेख लिखतीं तो भक्तिन एक कोने में बैठी रहती और जब लेखिका रैक की ओर देखती तो वह पूछती किस रंग की पुस्तक चाहिए। मैं कलम रख देती तो वह स्याही उठा लाती। इस प्रकार जब तक लेखिका नहीं सोती वह जागती रहती। मेरे सोने के बाद सोती और प्रातः काल मेरे उठने से पहले जाग जाती।

भ्रमण के समय भक्तिन हमेशा लेखिका के साथ रहती बद्रीनाथ केदारनाथ की पगडंडियों पर वह आगे चलती और छाया के समान हमेशा साथ रहती। जब देश की सीमा पर युद्ध छिड़ा तो उसके बेटी–दामाद नाती को लेकर उसे बुलाने आए परन्तु वह लेखिका को छोड़कर नहीं गई। युद्ध के भय से शहर के लोग गाँव भागने लगे तब उसने भी लेखिका से गाँव चलने की ज़िद की और कहा कि जब शांति हो जावेगी तो हम लोग फिर शहर वापस आ जायेंगे। जब लेखिका ने कहा कि गाँव जाने के लिए उसके पास रुपये नहीं हैं तो उसने कहा कि गाँव में मैंने गाढ़कर पाँच बीसी और पाँच रुपया रखा है, उसी से सारा प्रबंध कर लेंगे।

भक्तिन और लेखिका के बीच सेवक–स्वामी का संबंध था यह कहना कठिन है। लेखिका के किसी कार्य में रुकावट न हो इसलिए वह अपना दोनों समय का भोजन एक बार बना लेती लेखिका के परिचितों और साहित्यकारों से भी भक्तिन परिचित हो गई थी। वह किसी को नाम से, किसी को वेश–भूषा से पहचानती थी। वह सभी के दुःख को जानती थी। छात्रावास की यदि किसी छात्रा को सजा मिलती तो वह ऐसे डरती जैसे यमलोक से जेल की ऊँची दीवारें देखकर वह बेहोश हो जाती। उसकी यह कमजोरी सभी जान गए थे इसलिए लेखिका के जेल जाने की बात कहकर सभी उसे चिढ़ाते थे। तो वह लेखिका से पूछने लगती कि वह कितनी धोती साफ कर ले ताकि लेखिका को लज्जित न होना पड़े, क्या–क्या सामान बाँध दे ताकि जेल में कोई असुविधा न हो। लेखिका ने कहा कि जेल में किसी को साथ जाने की इजाजत नहीं है तो वह कहती "भला ऐसा अंधेर कैसे हो सकता है, जहाँ मालिक वहाँ नौकर। वह कहती कि यह अन्याय नहीं कि मालिक को बंद कर दे। नौकर को अकेला छोड़ना पहाड़ के बराबर अन्याय है इसके लिए चाहे उसे बड़े लाट तक से लड़ना पड़े तो भक्तिन लड़ेगी चाहे किसी की माई लड़ी हो या न लड़ी हो।"

लेखिका सोचती है जब ऐसा बुलावा आयोग जिसमें न धोती साफ करने का अवकाश मिलेगा, न सामान बाँधने का, न भक्तिन को रोकने का अधिकार होगा, न मुझे रुकने का तब चिर विदा के अन्तिम क्षणों में यह देहातिन वृद्धा क्या करेगी और लेखिका क्या करेगी।

Scanned with CamScanner